मैं संदर्भ का लगभग एक वर्ष से नियमित पाठक रहा हूं। इससे पहले मैं इस पत्रिका के बारे में बिलकुल भी नहीं जानता था। किन्तु एक बार कबाड़ वाले के ठेले से यह मुझे मिली, जहां किसी नासमझ व्यक्ति ने इसे बेच दिया होगा। पढ़ने के बाद मुझे उस व्यक्ति पर तरस आया जिसने इस पत्रिका को, जिसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय होता है, रद्दी समझ कर बेच दिया था। खैर, मैं उस गुमनाम व्यक्ति को धन्यवाद प्रेषित करता हूं जिसने मेरा परिचय संदर्भ से करवाया। उस दिन के बाद से मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक रहा हूं। यदि देखा जाए तो यह पत्रिका अपने आप में एक संपूर्ण पत्रिका है जिसमें गंभीर से गंभीर बात को भी तथ्यपूर्ण वैज्ञानिक विश्लेषण करके इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि कोई भी व्यक्ति इसे समझ सकता है। यह पत्रिका अपनी अनूठी भाषा शैली व अनोखे प्रस्तुतिकरण के कारण अपनी अलग ही पहचान रखती है। इस पुस्तक की भाषा, वैज्ञानिक विश्लेषण, दुर्लभ चित्र तथा रोचक तथ्य इस पत्रिका को अन्य पत्रिकाओं से बिल्कुल अलग रखने में सक्षम हैं। यूं तो इस पत्रिका में कई विशेषताएं हैं किन्तु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। अतः इस पत्रिका के लिए मैं कुछ सुझाव भेज रहा हूं। विश्वास है कि आप इन पर गौर फरमाएंगे।

- जिस प्रकार से पत्रिका का मुख व अंतिम पृष्ठ रंगीन दिया जाता है उसी प्रकार से पत्रिका के मध्य में भी कुछ रंगीन चित्र हों तो अच्छा रहेगा।
- यद्यपि पत्रिका में उन पुस्तकों का विवरण होता है जिनसे लिए गए चित्र पत्रिका में प्रकाशित होते हैं किन्तु फिर भी चित्र को पहचानना मुश्किल होता है कि कौन-सा चित्र किस पुस्तक से लिया गया है। अतः आप चित्र के नीचे उसकी स्रोत पुस्तक का नाम भी लिखें।
- पत्रिका में आप एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता (विज्ञान की) भी प्रारंभ करें जो अलग-अलग विषयों पर आधारित हो जैसे जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि। इससे पाठकों को अपनी बौद्धिक क्षमता बढ़ाने का अच्छा अवसर मिल सकेगा।
- इस पत्रिका के रूप में कभी-कभी विशेषांक भी दिया करें जिसमें किसी भी विषय विशेष पर विस्तृत जानकारी मिल सके।
- पत्रिका बहुत लेट आती है। जैसे मुझे 26वां अंक नवंबर या दिसंबर में पहुंच जाना चाहिए था

लेकिन अभी तक नहीं मिला है। आप इस ओर पूरा ध्यान दें कि पत्रिका पाठक के पास नियत समय पर पहुंचे। मेरा 26वां अंक भी आप अवश्य पहुंचाएं।

शशि कुमार जोशी
भिनाय, अजमेर, राजस्थान

क्योंकि 14वें अंक से हमारे स्कूल ने संदर्भ की सदस्यता ली हुई है इसी वजह से 14वें अंक से ही मैं इसका पाठक हूं। मैं सांप्रदायिक शिक्षा व्यवस्था को बिल्कुल पसंद नहीं करता इसलिए संदर्भ के अनुभूति मूलक लेख मुझे बहुत प्रेरणा देते हैं।

अंक 18 में प्रोफेसर यशपाल का जो भाषण छपा था वह वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर काफी सटीक बैठता है। लार्वा से वयस्क प्रजापति निकलने की प्रक्रिया का हमारे स्कूल के विज्ञान क्लब के बच्चे पहले से निरीक्षण कर चुके थे, और जब उन्होंने इसके बारे में 24-25वें अंक में पढ़ा तो बहुत खुश हुए।

चंद्रमा के बारे में अंक 22-23 में पूछे गए सवाल के जवाब मैंने आपके यहां भेजे थे, लेकिन बाद में जब मैंने आकाश का निरीक्षण किया तो पाया कि कृष्ण पक्ष में चंद्रकला के बारे में भेजे गए मेरे उत्तर सही नहीं थे। इस पक्ष में चंद्र का ऊपर से क्षय होता है। वास्तव में रोज़ देखकर भी चांद के बारे में यह सब नहीं जानना हमारे लिए खेद की बात है।

जगदीश ब्रह्मचारी, शिक्षक
बाबुपलि, सोनपुर, उड़ीसा

टॉलस्टोय का उपन्यास 'बचपन-किशोरावस्था-युवावस्था' पढ़ते-पढ़ते रात्रि के बारह बज गए। उपन्यास एक तरफ रखा व आंखें मूंदे लेटा रहा, इस इंतज़ार में कि एक-डेढ़ बजे और मैं आसमान में आतिश-बाज़ी देख सकूं। परन्तु न जाने कब आंख लग गई। ढाई बजे एक बीमार बच्चा आपातकालीन कक्ष में आया तो मुझे क्वार्टर से बुलवाया गया। बच्चे से फारिग हो मैं अस्पताल की हवाई-पट्टी जैसी खुली छत पर जा पहुंचा। नवंबर महीने का हल्का जाड़ा था। आसमान साफ व खुला था। अंधेरी रात में शांत व ठहरे-ठहरे तारे एक आकर्षक भाव-भंगिमा पैदा कर रहे थे। निगाहें उत्तर दिशा में 45 डिग्री पर आकाश में स्थिर थीं। ध्यान से देखा। लो एक जगह पर एक फुलझड़ी-सी जलती दिखी। यही तो उल्का पिण्डों की बौछार थी। यही तो आसमान में उल्का पिंडों द्वारा खेली जा रही दीपावली थी जो मैंने 18 नवंबर, 1998 की रात को हांसी जैसे अलसाए शहर में देखी। टेम्पल

टटल कॉमेट के पृथ्वी ग्रह के भूमंडल में प्रवेश करने पर यह स्वागती आतिशबाज़ी मनोहारी दृश्य पैदा कर रही थी। और फिर यह खगोलीय दीपावली आती भी तो 33 बरसों में एक बार है।

वह ज़माना भी ज़्यादा पुराना नहीं जब इस किस्म की खगोलीय घटनाओं को लोग ईश्वर का प्रकोप समझते थे। और सन् 1998 की इस घटना का आलम तो यह था कि मेरे मित्र की दो नन्हीं बेटियां रात को अलार्म लगाकर सोईं थीं कि रात में उठकर फुलझड़ी जलती देखनी है। तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण व सोच के हिसाब से हम आगे तो बढ़े ही हैं।

इस बार मीडिया – अखबार, टी.वी. व रेडियो – ने भी इस घटना को अच्छा कवरेज दिया। यह अलग बात है कि भारत में उल्का पिंडों की यह बौछार उतनी व्यापक न थी जितनी कि आशा थी। सुना है कि जापान व ऑस्ट्रेलिया के लोग इस मामले में ज़्यादा भाग्यशाली रहे।

डॉ. मुनीश रायज़ादा
हांसी, हरियाणा

संदर्भ के नवीन अंक में दी गई कहानी 'अनारको यमत लोक में' को अभी ही मैंने पढ़कर खत्म किया है। वो एक दूसरी एलिस है लेकिन अपने इरादे में बहुत पक्की। थोड़ी मज़ाकिया लेकिन काफी डरावनी कहानी थी, शायद बच्चों के लिए उतनी नहीं जितनी कि बड़ों और शिक्षकों के लिए। इस कहानी में विशेषकर मुझे वह सवाल बहुत अच्छे लगे जो वह यमत से पूछती है। बच्चों को चुप रखने और कराने के लिए बच्चों को टी.वी. और कम्प्यूटर में उलझाकर रखने का तरीका काफी लुभावना है। आजकल जब बच्चे स्कूल से वापस आकर बाहर जाते हैं तो मां-बाप को तो इस बात की चिंता ही नहीं करनी पड़ती कि खेल-कूद कर वे कब वापस आएंगे। टी.वी. और कम्प्यूटर उन्हें सुरक्षित घर पर रखते हैं – सुरक्षित और मूर्ख. . .।

वसंता सूर्या
तिरुवनमियूर, चेन्नई

नवीन अंक प्राप्त हुआ। बहुत अच्छा लगा। लेकिन एक बात ज़रा भी अच्छी नहीं लगी कि 'चंद्रमा-1' लेख में पूछी गई गलतियों के उत्तर देने की अंतिम तिथि 1 जनवरी रखी गई है। मुझे 31 दिसंबर को अंक मिला। ऐसे में कोई 1 जनवरी तक आप को जवाब कैसे पहुंच सकता है।

अगर आपके इस प्रकाशन में एक स्तंभ इस तरह का हो जिसमें वैज्ञानिक उपकरणों जैसे कि

टेलिस्कोप, माइक्रोस्कोप आदि के मॉडल बनाना सिखाए जाएं तो कई अन्य लोगों को भी काफी फायदा हो सकता है।

गौरव पोरवाल
गवत भाटा, राजस्थान

नए अंक की सजावट को देखकर मन नाच ही उठा। वाकई अंक बहुत ही सुंदर तरीके से संवारा गया है। सदस्यता शुल्क में बढ़ोत्तरी तो हम खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं लेकिन हमारी यह अपेक्षा भी बनी रहेगी कि संदर्भ में और अधिक सामग्री दिया करें। साथ ही इसके प्रकाशन में भी नियमितता लाने की ज़रूरत है।

इस अंक में प्रस्तुत लेखों में आर्यभटीय ज़्यादा अच्छा लगा। यह लेख 'पुस्तक परिचय' स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित किया गया है। यह कब प्रकाशित हुई? इसका प्रकाशक कौन है? मूल्य कितना है? कहां से मिल सकती है? आदि पूरी जानकारी भी लेख के साथ दिया करें ताकि पाठक को पूरी जानकारी मिल सके।

'ज़रा सिर तो खुजलाइए' तो हर बार बेहतरीन ही होता है। क्या आप 'खुद बनाओ' जैसा कोई स्तंभ नहीं शुरू कर सकते जिसमें घर पर ही विज्ञान के नियमों पर आधारित किसी चीज़ को बनाने की जानकारी हो।

सागर पाठक, फालियाबीड़
भावनगर, गुजरात

संदर्भ के आवरण पृष्ठ को देख रहा था तो एक सुझाव देने की इच्छा व्यक्त हुई। क्या किताबों के नाम, प्रकाशक, लेखक आदि को क्रमवार एक के नीचे एक नहीं प्रकाशित किया जा सकता? इससे पढ़ने में सुविधा होगी। अब 22-23 वें अंक पर कुछ टिप्पणी।

जैसे ही मुखपृष्ठ पलटा तो मूल्यवृद्धि की सूचना मिली। शायद बढ़ती हुई मंहगाई से संदर्भ भी प्रभावित हो गई।

नीरज जैन का लेख 'सिकाडा का मधुर संगीत' पढ़ा। वैसे सिकाडा जैसे जीवों से हमारा पाला तो कभी पड़ा ही नहीं है लेकिन जानकारी के लिहाज़ से लेख महत्वपूर्ण व रोचक था। इस अंक में मेघनाथ साहा के जीवन पर लेख मुझे बहुत पसंद आया क्योंकि मैं कुछ समय पहले वैज्ञानिकों की जीवनी पर लेख या कहानी की मांग कर चुका था।

विजय शंकर वर्मा ने 'जादुई तालाब की पहेली' को गणितीय

सिद्धांत में तब्दील करके वास्तव में रोचकता ला दी। मैंने स्वयं इसे इसी तरह हल करने की जुगत भिड़ाई पर असफल रहा।

चपालाल कुशवाहा
हिरनखेड़ा, होशंगाबाद

आपके द्वारा भेजा गया संदर्भ का 24-25वां अंक तो मिला ही साथ ही संदर्भ का मराठी नमूना अंक भी मिला। बहुत ही अच्छा कदम है कि इस ज्ञान को दूसरी भाषाओं की मालाओं में पिरोने का काम भी शुरू हो गया है।

संदर्भ के पूना के पते पर भी खत लिख रहा हूं। वैसे हमारा सुझाव तो यही है कि शैक्षिक संदर्भ के अंक की हूबहू नकल करके वैसे ही मराठी में प्रकाशित करें तो पाठकों को अधिक लाभ मिलेगा। नमूना अंक के तौर पर मराठी संदर्भ कमज़ोर था फिर भी प्रयास सराहनीय है।

राजकुमार गुप्ता
नाशिक रोड जेल, नाशिक

सयुक्ताक मिला। लेकिन शिकायत बरकरार है कि आप इसका प्रकाशन बड़ी देरी से करते हैं।

प्रो. अमर्त्य सेन का लेख 'पात्रता और अभाव' एक महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक और रोचक लेख था। कायांतरण में प्यूपा के संदर्भ में जानकारी रोचकता से परिपूर्ण थी।

आशीष पेटारे
इंदौर

मैं कक्षा 11 की छात्रा हूं और संदर्भ की नियमित पाठक भी। मेरा विषय जीवविज्ञान है। मैं इसे बहुत मन लगाकर पढ़ती हूं क्योंकि यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। और आप लोग तो इससे संबंधित बहुत अच्छी जानकारियां छापते हैं। मैं तो पढ़कर हैरान हो जाती हूं कि आप लोग इतनी जानकारी कैसे प्राप्त करते होंगे।

मुझे सुशील जोशी का 'कायांतरण' और किशोर पंवार का 'सिकाडा किलर्स' लेख बहुत ही अच्छे लगे। मैंने इन्हें पांच बार पढ़ा है। अमर्त्य सेन का चित्र देखकर तो मैं उछल ही गई। मैं आभारी हूं कि आप संदर्भ देर से भेजते हैं फिर भी मन खुश कर देते हैं। संदर्भ की भाषा भी बहुत अच्छी लगती है जैसे कि कोई बातचीत कर रहा हो।

अनिता सिसोदिया
शुजालपुर सिटी

मैं नवीं कक्षा का छात्र हूं। मुझे संदर्भ बहुत अच्छी और ज्ञानवर्धक लगती है। इसके स्तंभ 'सवालीराम' और 'ज़रा सिर तो खुजलाइए' काफी

पसंद हैं। मैं चाहता हूं कि इसमें पाठकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

अविजित शर्मा
वड़ोदरा, गुजरात

संदर्भ का अंक 22-23 मिला और उसे थोड़ा बहुत पढ़ा भी। दरअसल जिस मुद्दे पर मैं लिखना चाह रहा था वह मुद्दा है भाषा। मैं कहना यह चाहता हूं कि हम अंग्रेज़ी पढ़े लोग अपनी मातृ भाषाओं में नहीं लिखते या जो थोड़े बहुत लोग लिखते हैं वो भी अंग्रेज़ी की वैज्ञानिक शब्दावली का इस्तेमाल करते समय सजग नहीं रहते। 'सजग नहीं रहते' यह बात थोड़ी चुभती है लेकिन यदि गंभीरता से विचार किया जाए तो सजग रहना ज़रूरी है इस बात से आप सहमत हो सकेंगे।

मिसाल के तौर पर 'समुद्र सतह में उतार-चढ़ाव' लेख को ही लेते हैं। इस लेख में नियोग्लोबोक्वाड्रिना पेचिडर्मा और फोरामिनिफेरा इन दो शब्दों का (देवनागरी में लिखकर) इस्तेमाल किया गया है। इनमें से 'फोरामिनिफेरा' के लिए आचार्य रघुवीर के शब्दकोश में 'पादछिद्रिगण' यह शब्द दिया गया है। यदि इसी तरह सोचा जाए तो 'नियोग्लोबोक्वाड्रिना पेचिडर्मा' के लिए भी हम नए शब्द को गढ़कर उसका उपयोग कर सकते हैं। हो सकता है इस किस्म के देशी शब्दों को गढ़ने में संस्कृत शब्दों का उपयोग हम मे से कई लोगों को परेशानी भरा लगे। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अंग्रेज़ी/लैटिन/ग्रीक शब्दों के मुकाबले संस्कृत से बने शब्द कम कठिन होंगे।

वि. द. आप्टे
1187/1, सुमुख सहकारी
देशमुख पथ, पुणे, महाराष्ट्र

नए अंक के सभी लेख बहुत अच्छे लगे – विशेषकर कहानी 'अनारको यमत लोक में' और 'कैसे सीखते हैं बच्चे' लेख बहुत अच्छे लगे। संदर्भ से मुझे बहुत जानकारियां प्राप्त होती हैं।

रूबी चंद्रवंशी
सरस्वती विद्या मंदिर, हरदा

सयुक्त अंक 22-23 पढ़ा। इस अंक में हिरोशिमा से पोखरण, मूल सम्पन्न समाज, मॉनसून एक अबूझ पहेली, समुद्र सतह में उतार-चढ़ाव पढ़कर लगा कि यह भूगोल विशेषांक है। पहली बार इसमें विज्ञान के अलावा अन्य विषय पढ़ने को मिले।

राजेश साहू 'शिक्षक'
पचमढ़ी रोड़, पिपरिया
ज़िला होशंगाबाद म. प्र.